Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848
Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

Annual Subscriptioon: Rs-210/-
(Per Issue: Rs-20/-
Weight: 50-100gms/Issue

मार्च 2021ई०

आदरणीय तनवीर अहमद नायब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह जुनूबी हिन्द एवं आदरणीय खालिद अहमद अलादीन कायद ईसार एवं खिदमत-ए-खल्क मज्लिस अंसारुल्लाह भारत एवं मज्लिसअंसारुल्लाह के सदस्य दिव्य ज्योति फाउंडेशन हैदराबाद के अनाथालय में अनाथ बच्चों को कंबल भेंट करते हुए।

आदरणीय मकसूद अहमद भट्टी मैनेजर पत्रिका अंसारुल्लाह एवं आदरणीय मुबशीर अहमद ज़ईम एक धार्मिक संस्था के स्वामी को पुस्तक "नबीयों का सरदार" भेंट करते हुए।

आदरणीय कलीम अहमद खान मुबल्लिग़ इंचार्ज एवं मज्लिस अंसारुल्लाह के सदस्य सरकारी अफ़सरों को जमाअती लिफलेट्स भेंट करते हुए।

मज्लिस अंसारुल्लाह करुन्नागपल्ली केरल द्वारा आयोजित वकार-ए-अम्ल का दृश्य।

तिथि 3 फ़रवरी 2021 ई. को जमाअत अहमदिया खोला बनदा ज़िला बारपेटा राज्य आसाम में आयोजित तर्बियती इज्लास का दृश्य।

तिथि 26 जनवरी 2021 ई. को आदरणीय खालिद अहमद अलादीन कायद ईसार एवं खिदमत-ए-खल्क मज्लिस अंसारुल्लाह भारत एक सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को नोट बुक एवं फल वितरण के पश्चात वार्तालाप करते हुए।

तिथि 7 फ़रवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह जमशेदपुर राज्य झारखंड द्वारा आयोजित तर्बियती इज्लास के अवसर पर स्टेज का दृश्य ।

तिथि 26 जनवरी 2021 ई. मज्लिस अंसारुल्लाह कोलकाता बंगाल द्वारा आयोजित मैडिकल कैम्प का दृश्य ।

तिथि 7 फ़रवरी 2021 ई. को मज्लिस अंसारुल्लाह विशाखापट्टनम राज्य आंध्रप्रदेश द्वारा आयोजित तब्लीगी प्रोग्राम का दृश्य।

तिथि 21 जनवरी 2021 ई. को आदरणीय मुस्लेह उद्दीन सादी मुबल्लिग़ इंचार्ज कोलकाता पार्क सर्कस के एक चर्च में जमाअत अहमदिया का संदेश पहुंचाते हुए ।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19 मार्च 2021 **Issue - 3**

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
मक्सूद अहमद भट्टी
Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग
तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय -क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन चालीस वर्ष गर्भ के चार महीने समान हैं	6
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अन्य धर्म वालों से सहानुभूति दिखाने के आलोक में	8

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

هُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡهُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡهِمۡ اٰیٰتِهٖ وَیُزَکِّیۡهِمۡ وَیُعَلِّمُهُمُ الۡکِتٰبَ وَالۡحِکۡمَةَ ۚ وَاِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۙ وَّاٰخَرِیۡنَ مِنۡهُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِهِمۡ ؕ وَهُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ

(सूर: जुम्अ : आयत 2 से 5)

अनुवाद: वही है जिसने अनपढ़ लोगों में इन्हीं में से एक महान रसूल मबऊस किया। वह उन पर इस की आयतों की तिलावत करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की शिक्षा देता है जबकि इस से पहले वे अवश्य खुली खुली गुमराही में थे। और इन्हीं में से दूसरों की तरफ़ भी (उसे मबऊस किया है) जो अभी उन से नहीं मिले। वह पूर्ण ग़लबा वाला (और हिक्मत वाला) है

दर्सुल हदीस

عَنۡ اَبِیۡ هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ وَالَّذِیۡ نَفۡسِیۡ بِیَدِهٖ لَیُوۡشِکَنَّ اَنۡ یَّنۡزِلَ فِیۡکُمُ ابۡنُ مَرۡیَمَ حَکَمًا عَدۡلًا فَیَکۡسِرُ الصَّلِیۡبَ وَیَقۡتُلُ الۡخِنۡزِیۡرَ وَیَضَعُ الۡحَرۡبَ وَیُفِیۡضُ الۡمَالَ حَتّٰی لَا یَقۡبَلَهٗ اَحَدٌ حَتّٰی تَکُوۡنُ السَّجۡدَةُ خَیۡرًا مِنَ الدُّنۡیَا وَمَا فِیۡهَا۔

(बुख़ारी। किताबुल अंबिया बाब नुज़ूल ईसा इब्ने मर्यम)

अनुवाद::हज़रत अबूहुरैरह रज़ि अल्लाह तआला वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़सम उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है शीघ्र तुम में इब्ने मर्यम नाज़िल होगा जो सही फ़ैसला करने वाला,न्याय से काम लेने वाला होगा। वह सलीब को तोड़ीगा,सूअर को क़त्ल करेगा। लड़ाई को ख़त्म करेगा। वह इतना माल लुटाएगा, कि कोई उस को क़बूल न करेगा। ऐसे वक़्त में एक सिज्दा दुनिया तथा उस के मालों से बेहतर होगा। अर्थात भौतिकता की बढ़ोतरी का ज़माना होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

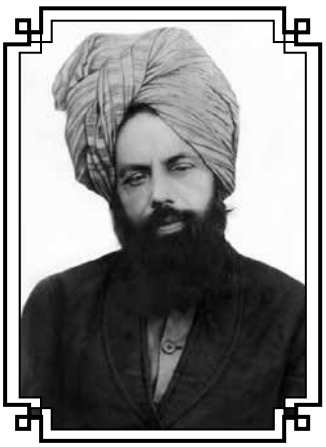

महदी की सच्चाई के प्रमाण

"मुझे उन लोगों(विरोधियों) की हालत पर रहम और अफ़सोस आता है कि ये क्यों ग़ौर नहीं करते और नबुव्वत की प्रणाली पर इस सिलसिले की सच्चाई को नहीं समझते। वे देखते कि इतनी सहायताएं और समर्थन जो अल्लाह तआला कर रहा है क्या यह किसी झूठे और कज़्ज़ाब को भी मिल सकती हैं? हरगिज़ नहीं। कोई व्यक्ति इलाही सहायता के बिना इतना दावा कब कर सकता है। क्या वह थकता नहीं? और फिर अल्लाह तआला मुफ़्तरी के लिए इतनी ग़ैरत नहीं दिखाता कि उसे हलाक करे? बल्कि उस को झूट देता जाता है और न केवल छूट बल्कि उस की भविष्यवाणियों को भी सच्चा कर देता है और दूसरे लोगों के मुक़ाबला में जो उस का विरोध करते हैं उसी का समर्थन करता है और उसी को विजय देता है। इन्सानी हुकूमत के मुक़ाबला में यदि कोई व्यक्ति झूठ बोलता है और झूटी हालत बना कर कहे कि मैं उहदेदार हूँ तो वह पकड़ा जाता है और फस को सख़्त सज़ा दी जाती है लेकिन क्या आश्चर्य की बात नहीं कि एक मुफ़्तरी अल्लाह तआला पर झूठ घढ़ता जाए तो फिर निशान भी दिखाता जाए और उसे कोई न पकड़े। बराहीन अहमदिया के प्रकाशन को बीस वर्ष के क़रीब हुए। यह वह ज़माना था जबकि गांव में भी हम को कोई शनाख़्त नहीं करता था। गांव वाले मौजूद हैं। ख़ुद मौलवी मुहम्मद हुसैन जिसने इस किताब पर रिव्यू लिखा ज़िन्दा मौजूद है इस से पूछो कि उस वक़्त क्या हाल था। ऐसे वक़्त ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि एक के बाद एक समूह में लोग तेरे पास आएँगे। يَأْتُوْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ दूर दराज़ से तेरे पास लोग आएँगे और तोहफ़े आएँगे। फिर यह भी कहा कि लोगों से थकना मत। अब कोई सोचे और देखे कि ख़ुदा तआला के ये वादे किस तरह पूरे हुए। इन सूचियों को गर्वनमैंट के पास देख ले जो आने वाले मेहमानों की बन कर साप्ताहिक जाती हैं। और डाकख़ाना और रेल के रजिस्टरों की पड़ताल करे जिससे पता लगेगा कि कहाँ कहाँ से तोहफ़े और रुपया आ रहा है और कादियान में बैठ कर देखें कि कितनी भीड़ और लोगों का समूह का होता है। अगर अल्लाह तआला का फ़ज़ल और इस की तरफ़ से बिशारत और शक्ति न मिले तो इन्सान थक जाए और मुलाक़ातों से घबरा उठे। इस ने यह इलहाम किया कि घबराना न। वैसे ही शक्ति भी प्रदान की कि घबराहट होती ही नहीं और ऐसा ही अंग्रेज़ी, उर्दू, अरबी, इब्रानी में बहुत से इल्हाम हुए जो उस वक़्त से छपे हुए मौजूद हैं और पूरे हो रहे हैं। अब ख़ुदा से भय रखने वाले दिल लेकर मेरे मामला पर चिन्तन करते तो एक नूर उनका मार्गदर्शन करता और ख़ुदा की रूह उन पर सन्तोष और इत्मीनान की राहें खोल देती। वह देखते कि क्या ये इन्सानी ताक़त के अन्दर है जो इस किस्म की भविष्यवाणी करे? इन्सान को अपनी ज़िन्दगी के एक दम का भरोसा नहीं हो सकता तो यह किस तरह कह सकता है कि तेरे पास दूर से लोग आऐंगे और ऐसे ज़माने में ख़बर देता है जबकि वह पर्दा में है और उस को कोई अपने गावं में भी पहचानता नहीं। फिर वह भविष्यवाणी पूरी होती है। इस के विरोध में नाख़ुनों तक ज़ोर लगाया जाता है और इस के तबाह करने और फना करने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी जाती परन्तु अल्लाह तआला उस को सफल करता और हर नए विरोध पर उस को महान तरक़्क़ी प्रदान करता है। क्या यह ख़ुदा के काम हैं या इन्सानी मन्सूबों के नतीजे? असल यही है कि यह ख़ुदा तआला के काम हैं और लोगों की नज़रों में अजीब। मौलवियों ने वि?ाध के लिए जाहिलों को भड़काया और लोगों को जोश दिलाया, क़त्ल के फ़तवे दिए, कुफ़र के फ़त्वे प्रकाशित किए और हर तरह से आम लोगों को विरोध के लिए तत्पर किया परन्तु क्या हुआ? अल्लाह तआला के समर्थन और सहायताएं और भी ज़ोर के साथ हुईं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 18-21 प्रकाशन 1984 ई)

सम्पादकीय

क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है।

हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार वर्तमान ज़माना में इस्लाम का केवल नाम बाक़ी रह गया था और पवित्र कुरआन की केवल तहरीर रह गई थी। पवित्र क़ुरआन की भविष्यवाणी के अनुसार उम्मते मुहम्मदिया ने क़ुरआन करीम को त्यक्त छोड़ा था। क़ुरआन क़रीम के ख़ूबसूरत नुस्ख़े रंग बिरंगे ग़िलाफ़ों में लपेट कर ताक़चों में रखा जाने लगा था। अत: क़ुरआन करीम के अर्थों पर ग़ौर और अनुकरण की कमी साफ़ नज़र आ रही थी। ऐसे दौर में अल्लाह तआला उस मसीह व महदी को मबऊस फ़रमाया जिस के द्वारा ईमान सुरय्या से दुबारा वापस लाया जाना निर्दिषट था। युग के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आरम्भ ही से क़ुरआन करीम को ध्यानपूर्वक पढ़ते थे और इस के अर्थों पर चिन्तन करते हुए उस पर अनुकरण किया करते थे। क़ुरआन मजीद को बहुत अधिक ध्यान से से पढ़ने के सिलसिला में आदरणीय डाक्टर बिशारत अहमद साहिब लिखते हैं कि

"आप का एक क़ुरआन शरीफ़ मौलाना मुहम्मद अली साहिब के पास भी है जिसे आपने 17 साल पढ़ा था। पढ़ पढ़ कर उस के पृष्ठ तक घिसा दिए हैं। इस के हाशिया पर अपनी क़लम से आदेश तथा मनाही के नन्बर भी दिए हैं।"

(मुजद्दिद आज़म भाग 2 पृष्ठ1381 प्रकाशित अहमदिया अंजुमन इशाअत इस्लाम लाहौर)

हज़रत मसीह मौऊद आपना व्यक्तिगत अनुभव यूं वर्णन फ़रमाते हैं

"अवश्य यह समझो कि जिस तरह यह संभव नहीं कि हम बिना आँखों के देख सकें या बिना कानों के सुन सकें या बिना ज़बान के बोल सकें इसी तरह यह भी संभव नहीं कि बिना क़ुरआन के इस प्यारे महबूब का मुँह देख सकें। मैं जवान था अब बूढ़ा हुआ परन्तु मैं ने कोई न पाया जिसने बिना इस पवित्र चश्मा के इस खुली खुली मार्फ़त का प्याला पिया हो।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी, रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 442)

और एक स्थन पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मैं जवान था अब बूढ़ा हो गया और अगर लोग चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि मैं दुनियादारी के कामों में नहीं पड़ा और धार्मिक कामों में हमेशा मेरी दिलचस्पी रही। मैं ने इस कलाम को जिसका नाम क़ुरआन है बहुत अधिक पवित्र और रुहानी हिक्मत से भरा हुआ पाया। न वह किसी इन्सान को ख़ुदा बनाता और न रूहों और जिस्मों को इस की पैदाइश से बाहर रखकर उस का तिरस्कार और निन्दा करता। और वह बरकत जिसके लिए मज़हब स्वीकार किया जाता है उस को यह कलाम आख़िर इन्सान के दिल पर वारिद कर देता है और ख़ुदा के फ़ज़ल का उस को मालिक बना देता है। अत: क्योंकर हम रोशनी पाकर फिर अन्धेरे में आएं। और आँखें पा कर फिर अंधे बन जाएं।"

(सनातन धर्म, रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 474)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम फ़रमाते हैं

"मैं क़ुरआन शरीफ़ का एक सेवक हूँ और यह वह्य जो मुझ पर उतरती है यह क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाई का एक प्रकाशित प्रमाण है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 74 संस्करण 1988 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुरआन के इशक़ का अंदाज़ा इस निम्नलिखित शेअर से हम लगा सकते हैं। आप फरमाते हैं।

दिल में यही है हरदम तेरा सहीफ़ा चौमूं
क़ुरआँ के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला का हम पर यह भी उपकार है कि उसने हमें इस ज़माने में पैदा किया और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करने की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाई और यह तौफ़ीक़ देकर आपके द्वारा क़ुरआन करीम के महत्तव तथा मार्फ़त जानने के सामान भी उपलब्ध फ़रमाए। क़ुरआन करीम के ज्ञान तथा मार्फ़त के खज़ाने आपने हमारे सामने पेश फ़रमाए। इस की सही इदराक तो आपकी किताबें पढ़ने से होती है और हो सकता है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 11 जुलाई 2014 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें क़ुरआन करीम की शिक्षाओं पर अनुकरण करने की तौफीक़ दे।

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

चालीस वर्ष गर्भ के चार महीने समान हैं।

प्राय चालीस वर्ष की उम्र से इन्सान की सेहत,सोच और ज़िन्दगी के हालात में तब्दीलियां अधिक होना शुरू हो जाती हैं। क़ुरआन करीम की शिक्षाओं से मालूम होता है कि इन्सान जब अपनी ज़िन्दगी के चालीसवीं मंज़िल पर पहुंचता है तो गम्भीर हो जाता है और पवित्र तब्दीली की तरफ़ ध्यान करता है। कहा जाता है कि समस्त अंबिया को चालीस वर्ष की उम्र से पहले नबुव्वत नहीं मिली है । इस उम्र में होने वाली तब्दीलियों का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"सच्चा तजुर्बा यह बात बताता है कि जब इन्सान अपनी उम्दा ज़िन्दगी का आधा हिस्सा अर्थात चालीस वर्ष जो गर्भ के चार महीने से सदृश्य है तय कर लेता है या उस के सिर पर पहुंच जाता है तब अगर उस के ख़मीर में सच्चाई की रूह होती है तो वह रूह उस विशेष वक़्त पर आ कर अपने स्पष्ट निशान दिखाती है और हरकत करना शुरू कर देती है।

.... फिर जब चालीस वर्ष तक पहुंचता है तो जवानी के बाल कुछ-कुछ गिरने शुरू हो जाते हैं। अब ख़ुद ही उन बहुत सी गुनाहों पर लज्जित होता है जिन पर नसीहत करने वाले सिर पीट कर रह गए थे। और अपने आप नफ़्स के जोश कम होते चले जाते हैं क्योंकि जिस्मानी हालत की दृष्टि से उम्र के पतन का ज़माना भी शुरू हो जाता है वह जोश मारने वाला ख़ून अब कहाँ पैदा होता है जो पहले पैदा होता था वह अंगों की ताक़त और जवानी की मस्ताना चाल कहाँ बाक़ी रहती है जो पहले थी। अब तो अवनति और घाटे का ज़माना आता जाता है और इस पर निरन्तर उन बुज़ुर्गों की मौतें देखनी पड़ती हैं जो अपनी उम्र से बहुत अधिक थे बल्कि कई बार क़ज़ा तथा क़द्र से छोटों की मौतें भी कमरों को तोड़ती हैं और शायद उस ज़माना में माता पिता भी क़ब्रों में जा लेटते हैं और दुनिया की नशवरता के बहुत से नमूने ज़ाहिर हो जाते हैं और ख़ुदा तआला उस के सामने एक आईना रख देता है कि देख दुनिया की यह कहानी है। और जिसके लिए तू मरता है उस का अन्जाम यह है। तब अपनी पिछली ग़लतियों को हसरत की निगाह से देखता है और एक भारी इन्क़िलाब इस पर आता है और एक नई दुनिया शुरू होती है शर्त यह है कि ख़मीर में नेकी रखता हो और उनमें से हो जो बुलाए गए हैं.. चालीसवां साल नेक बंदों पर मुबारक आता है और जिसमें सच्चाई की रूह है वह रूह ज़रूर चालीसवें साल में हरकत करती है। ख़ुदा के प्राय बुज़ुर्ग नबी भी इसी चालीसवें साल पर ज़हूर फ़र्मा हुए हैं। अत: हमारे सय्यद मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चालीसवें वर्ष में ही मानव जाति के सुधार के के लिए प्रकट हुए।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी ,रूहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 322)

हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं

"इस में कोई शंका नहीं कि जमाअत का दिमाग़ी प्रतिनिधित्व अन्सार करते हैं और इस के दिल और

हाथों का प्रतिनिधित्व ख़ुद्दामुल अहमदिया करते हैं। जब किसी क़ौम के दिमाग़, दिल और हाथ ठीक हों तो वह क़ौम भी ठीक हो जाती है। अत: मैं पहले तो अंसारुल्लाह को ध्यान दिलाता हूँ कि जमाअत में नमाज़ों, दुआओं, अल्लाह तआला से सम्बन्ध को क़ायम रखना उनका काम है। उनको तहज्जुद, ज़िक्रे इलाही और मस्जिदों की आबादी में इतना हिस्सा लेना चाहिए कि नौजवान उनको देखकर ख़ुद ही उन बातों की तरफ़ माइल हो जाएं।"

(अल्फ़ज़ल 15 दिसम्बर 1955 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"जमाअत की ज़ैली तन्ज़ीमों के निज़ाम में अन्सारुल्लाह की तंज़ीम ऐसी है जिसके मैंबर अपनी इस उम्र को पहुंच जाते हैं जिसमें इन्सान को अपनी ज़िन्दगी के अंजाम के निसान नज़र आना शुरू हो जाते हैं और बड़ी तेज़ी से इस अंजाम की तरफ़ क़दम बढ़ते चले जाते हैं। और इस अंजाम का ख़ौफ़ उसे मजबूर करता है कि वह ख़ालिस हो कर ख़ुदा तआला के समझ झुके और उस का सानिध्य चाहे।"

(मासिक अन्सारुल्लाह अक्तूबर 2010 ई पृष्ठ 8)

अल्लाह तआला हमें इन हिदायतों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अन्य धर्म वालों से उत्तम व्यवहार के आलोक में

संकलनः एच शम्सुद्दीन क़ाइद तर्बीयत मज्लिस अन्सारुल्लाह, भारत

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम ने सभी इन्सानों से बिना किसी धर्म के अन्तर के एक जैसा व्यवहार किया न केवल इस की शिक्षा दी बल्कि अपने व्यावहारिक आदर्शों से इस के उत्तम उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं। आप अपने प्रमुख पुस्तक पैग़ामे सुलह को इस तरह से शुरू करते हैं :

"हे श्रोताओ! हम सब क्या मुस्लमान और क्या हिंदू बावजूद सैंकड़ों मतभेदों के उस ख़ुदा पर ईमान लाने में शरीक हैं जो दुनिया का सृष्टा और मालिक है और ऐसा ही हम सब इन्सान के नाम में भी साझी रखते हैं। अर्थात हम सब इन्सान कहलाते हैं। और ऐसा ही एक ही देश का निवासी होने के कारण एक दूसरे के पड़ोसी हैं। इस लिए हमारा फ़र्ज़ है कि नेक दिल और नेक नीयत के साथ एक दूसरे के मित्र बन जाएं और धर्म तथा दुनिया की कठिनाइयों में एक दूसरे की हमदर्दी करें। और ऐसी हमदर्दी करें कि मानो एक दूसरे के अंग बन जाएं।

हे देशवासियो! वह धर्म धर्म नहीं है जिसमें साधारण हमदर्दी की शिक्षा न हो। और न वह इन्सान इन्सान है जिसमें हमदर्दी का बीज न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी क़ौम से अन्तर नहीं किया। जैसे जो जो इन्सानी ताक़तें और क़ुव्वतें आर्यावर्त की पुरानी क़ौमों को दी गई हैं। वही समस्त शक्तियां अरबों और फ़ारसियों और शामियों और चीनियों और जापानियों और यूरोप और अमरीका की क़ौमों को भी प्रदान की गई हैं सब के लिए ख़ुदा की ज़मीन फ़र्श का काम देती है और सब के लिए उस का सूरज और चांद और कई और सितारे रोशन चिराग़ का काम दे रहे हैं।"

(पैग़ामे सुलह रुहानी ख़ज़ाइन भाग 23 पृष्ठ 439)

फिर आप फ़रमाते हैं

"अवश्य याद रखो कि मोमिन मुत्तक़ी के दिल में बुराई नहीं होती। जितना जितना इन्सान मुत्तक़ी होता जाता है उसी क़दर वह किसी की निसबत सज़ा और कष्ट को पसन्द नहीं करता। मुस्लमान कभी द्वैष वाला नहीं हो सकता। हम ख़ुद देखते हैं कि इन लोगों ने हमारे साथ क्या-किया है। कोई दुख और कष्ट जो वे पहुंचा सकते थे उन्होंने पहुंचाया है। लेकिन फिर भी उन की हज़ारों ग़लतियां क्षमा करने को अब भी तैयार हैं। अतः तुम जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो याद रखो कि तुम हर व्यक्ति से चाहे वह किसी धर्म का हो सहानुभूति करो। और बिना किसी अन्तर के हर एक से नेकी करो।"

(अलहकम दिनांक 24 जनवरी 1905 ई पृष्ठ 4 कालम 3)

"मानव जाति के साथ हमदर्दी में मेरा यह धर्म है कि जब तक दुश्मन के लिए दुआ न की जाए पूरे तौर पर दिल साफ़ नहीं होता है...शुक्र की बात है कि हमें अपना कोई दुश्मन नज़र नहीं आता जिसके लिए दो तीन बार दुआ न की हो। एक भी ऐसा नहीं और यही मैं तुम्हें कहता हूँ .. अतः तुम जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो तुम्हें चाहिए कि तुम ऐसी क़ौम बनो जिसके बारे में आया है فَاِنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ अर्थात वह ऐसी क़ौम है कि उनका साथ वाला हतभागा नहीं होता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 96- 97)

"हमारा यह उसूल है कि समस्त मानव जाति की हमदर्दी करो। यदि एक व्यक्ति एक हिंदू पड़ोसी को देखता है कि उस के घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि आग बुझाने में मदद दे तो मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि वह मुझ से नहीं है। अगर एक शख़्स हमारे मुरीदों में से देखता है कि एक ईसाई को कोई क़त्ल करता है और वह उस के छुड़ाने के लिए मदद नहीं करता तो मैं तुम्हें बिलकुल दरुस्त कहता हूँ कि व हम में से नहीं है। "

(रुहानी ख़ज़ाइन भाग 12 सिराज मुनीर पृष्ठ 28)

मानव जाति से सहानुभूति आपका विशेष गुण रहा है। अपने और पराए सब आपके इस उच्च आचरण से लाभान्वित होते रहे। विशेष रूप से हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम अपने क़रीबी पड़ोसियों अर्थात हिन्दू भाईयों से उत्तम आचरण का

न केवल अति उत्तम नमूना पेश फ़रमाया बल्कि माली तथा जानी प्रत्येक दृष्टि से मदद भी फ़रमाई। तारीख़ अहमदियत ऐसी घटनाओं से भरी हुई हैं। कुछ एक घटनाएं पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।

शरारतें करने वाले ब्रह्मन को मुतअद्दिद बार नक़द इमदाद

"कादियान में एक व्यक्ति निहाल चंद (निहाला बहारो राजा) एक ब्रहमन था अपनी जवानी के दिनों में वह एक मशहूर मुक़द्दमा करने वाला था। आख़िर उम्र तक लगभग उस की ऐसी ही हालत रही। वह उन लोगों में से था जो हज़रत अक़्दस के ख़ानदान के साथ प्राय मुक़ाबला और शरारतें करते रहते थे फिर सिलसिला के दुश्मनों के साथ भी वह रहता। अन्त उम्र में इस की आर्थिक अवस्था ख़राब हो गई। और यहां तक कि कई बार उस को अपनी रोज़ाना ज़रूरतों के लिए भी मुश्किलें पेश आती थीं। इस ने एक बार हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आकर मुलाक़ात की इच्छा की और सूचना दी। हज़रत साहब शीघ्र बाहर आए। इस ने सलाम करके अपना क़िस्सा कहना शुरू किया। हज़रत अकदस ने न केवल तसल्ली दी बल्कि पच्चीस रुपए की रक़म लाकर उस के हाथ में दे दी। और फ़रमाया, फ़िलहाल इस से काम चलाऊ। फिर जब ज़रूरत हो मुझे सूचना देना। अत: उस के बाद इस व्यक्ति की आदत हो गई कि वह महीने दो महीने के बाद आता और एक बड़ी रक़म आपसे अपनी ज़रूरतों के लिए ले जाता।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद संकलन हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी रज़ि पृष्ठ 299)

लाला शर्मपत की इयादत

लाला शर्मपत भी कट्टर आर्या थे परन्तु हज़ूर के पास आना जाना था। उन्होंने आपके बहुत से निशान देखकर भी उनको सत्यापित न किया। उनकी बीमारी पर आप उनकी इयादत के लिए उस वक़्त तक उनके मुहल्ला और तंग मकान में जाते रहे और हर तरह तसल्ली देते रहे और सेहत के लिए दुआ भी करते रहे कि लाला साहिब सेहतमन्द हो गए। अत: आप की सारी ज़िन्दगी लोगों के साथ उपकार से भरी हुई है। बराबरी, हमदर्दी और दिलदारी आप का दिन रात का काम था।

एक कट्टर विरोधी हिंदू से सहानुभूति वाला व्यवहार

आर्या अख़बार "शुभचिंतक" के सम्पादक तथा मैनेजर इत्यादि जो अपने अख़बार में आप का अपमान करते और गालियां देते थे, अच्छर चंद और इस का साथी भगतराम ताऊन से मर गए और ऐडीटर सोमराज बीमार पड़ा था। उसने हकीम मौलवी उबैदुल्लाह साहिब की तरफ़ इलाज के लिए रुजू किया और उन्होंने हज़ूर से इलाज के लिए इजाज़त मांगी तो आप ने दया करते हुए फ़रमाया: "आप ईलाज ज़रूर करें क्योंकि इन्सानी हमदर्दी की मांग है परन्तु मैं आपको बता देता हूँ कि यह व्यक्ति बचेगा नहीं।"

(अलहकम 10-अप्रैल 1907 ई)

लाला मलावामल की इयादत

लाला मलावामल साहिब भी हुज़ूर के पास आते-जाते रहते थे। 22 साल की उम्र में अर्क़ुन्निसा बीमारी के कारण बीमार हो गए। हुज़ूर सुबह तथा शाम उनकी ख़बर ख़ादिम के द्वारा मंगवाते थे और दिन में एक बार ख़ुद तशरीफ़ ले जाकर इयादत करते थे और ईलाज भी फ़रमाते थे। एक सुबह जब ख़ादिम ख़बर पूछने गया तो लाला साहिब ने पैग़ाम भेजा कि हुज़ूर ख़ुद आएं। हुज़ूर फ़ौरन तशरीफ़ ले गए। लाला साहिब की हालत ख़राब हो रही थी। हुज़ूर ने ईलाज बताया जिससे ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से सेहत हुई।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल लंदन 7 -जनवरी 2000 ई)

लेखराम की मौत पर हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम का इरशाद

"हमारे दिल की इस वक़्त अजीब हालत है दर्द भी है और ख़ुशी भी। दर्द इस लिए कि यदि लेखराम रुजू करता, ज़्यादा नहीं तो इतना ही करता कि वह बुरा कहने से रुक जाता जाता तो मुझे अल्लाह तआला की क़सम है कि मैं उस के लिए दुआ करता और मैं उम्मीद रखता था कि अगर वह टुकड़े टुकड़े भी किया जाता तब भी ज़िन्दा हो जाता।"

(सिराज मुनीर पृष्ठ 26 रुहानी ख़ज़ाइन भाग 12)

गवाही वही जो दूसरें दें।

"वर्णन किया हमसे हाफ़िज़ रोशन अली साहिब ने कि जब मिनारतुल मसीह बनने की तैयारी हुई तो कादियान के लोगों ने गर्वनमैंट के आफ़सरों के पास शिकायतें कीं कि इस

मीनारा के बनने से हमारे मकानों की पर्दादरी होगी। अत: गर्वनमैंट की तरफ़ से एक डिप्टी कादियान आया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्जिद मुबारक के साथ वाले कमरा में मिला। उस वक़्त कादियान के कुछ लोग जो शिकायतें करने वाले थे वे भी इस के साथ थे। हज़रत साहिब से डिप्टी की बातें होती रहें और इस वार्तालाप में हज़रत साहिब ने डिप्टी को सम्बोधित करके फ़रमाया कि "यह बूढ्ढा मिल बैठा है आप इस से पूछ लें कि बचपन से लेकर आज तक क्या कभी ऐसा हुआ है कि उसे लाभ पहुंचाने का मुझे अवसर मिला हो और मैंने लाभ पहुंचाने में कोई कमी की हो और फिर उस से पूछ लें कि कभी ऐसा हुआ है कि मुझे कष्ट देने का उसे कोई अवसर मिला हो तो उस ने मुझे तकलीफ़ पहुंचाने में कोई कमी छोड़ी हो।" हाफ़िज़ साहिब ने वर्णन किया कि मैं उस समय बूढ्ढामल की तरफ़ देख रहा था उसने शर्म के मारे अपना सिर नीचे अपने घुटनों में दिया हुआ था और उस के चेहरा का रंग सफेद पड़ गया था और वह एक शब्द भी मुँह से नहीं बोल सका।"

(सीरतुल महदी भाग 1 पृष्ठ 134)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में हिन्दू अख़बारों के विचार

कहा जाता है गवाही वही होती है जो दूसरे दें। किसी की महानता पर दूसरों की गवाही ही सब से प्रभावी होती है। अत: इस दृष्टि में आप की दया और उपकार का सीधा सुलूक की तौफ़ीक़ पाने वाले ग़ैरों के विचारों में से कुछ एक नमूने देखें:

आर्या अख़बार इन्द्र

"मिर्ज़ा साहिब अपने एक गुण में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से बहुत समानता रखते थे और वह गुण उनका दृढ़ निश्चयी होना था। चाहे वह किसी लक्ष्य को लेकर था। और हम ख़ुश हैं कि वह आख़िरी दम तक इस पर डटे रहे और हज़ारों विरोध के बावजूद ज़रा भी कदम पीछे नहीं उठया।"

(हयाते तय्यबा पृष्ठ 363)

अख़बार आर्या पुत्र लाहौर

"प्राय जो इस्लाम दूसरे मुस्लमानों में पाया जाता है उस की तुलना में मिर्ज़ा साहिब के विचार इस्लाम के बारे में ज़्यादा व्यापक और ज़्यादा सहन योग्य थे। मिर्ज़ा साहिब के सम्बन्ध आर्या समाज से कभी दोस्ताना नहीं हुए और जब हम आर्या समाज की पिछली तारीख़ को याद करते हैं तो उनका वजूद हमारे सीनों में बड़ा जोश पैदा करता है।"

(हयात तय्यबा पृष्ठ 363)

बह्म प्रचारक

"हम यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकते कि वह क्या योग्यता की दृष्टि से और क्या आचरण की दृष्टि से और क्या उत्तम व्यवहार में एक बड़े उच्च स्तर के इन्सान थे।

(तारीख़ अहमदियत भाग 2 पृष्ठ 567)

अमृत बाज़ार पत्रिका कलकत्ता

"वह फ़क़ीरों की तरह जीवन व्यतीत करते थे और सैकड़ों आदमी रोज़ाना उनके लंगर से खाना खाते थे।

(तारीख़ अहमदियत भाग 2 भाग 267)

यह सूचि भी काफ़ी लंबी है। सच तो यह है कि आप समस्त गुणों का वर्णन करना अस छोटे से निबन्ध में असम्भव है। अहमदिया मुस्मिल जमाअत के वर्तमान ख़लीफा हज़रत अक़दस अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की नसीहत एक स्थायी रहनुमा नियम है। आप फ़रमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि पड़ोसी तो 100 कोस तक भी होता है। अत: आज जबकि अहमदी दुनिया के 185 से अधिक देशों में हैं। कई इलाक़ों में शायद थोड़े हैं या अधिक हैं। अपने इर्द-गिर्द के 100-100 मील के इलाक़े को भी अपनी सलामती के पैग़ाम से सुगन्धित कर दें तो दुनिया के बड़े हिस्सा में इस्लाम के बारे में जो ग़लत-फ़हमियाँ हैं, उस के ख़िलाफ़ जो उग्रवाद और अत्याचार करने वाला होने का इल्ज़ाम लगाया जाता है वह सब दाग़ धुल सकते हैं। अगर हम ऐसा न करें तो इस युग की कोताही कर रहे होंगे जो हमने इस ज़माना के इमाम से बाँधा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 1 जून 2007 ई)

मुझे बैर हरगिज़ नहीं है किसी से
मैं दुनिया में सब का भला चाहता हूँ।
निकाला मुझे जिसने मेरे चमन से
मैं उस का भी दिल से भला चाहता हूँ।